|| सोना बनाने की गुप्त विधि फार्मूला तरकीब ||
Sona banane ki gupt vidhi formula tarkeeb ||

वेदों में कीमिया का खूब वर्णन मिलता है। हमारे ऋषि मुनि विभिन्न प्रकार की शोध में लगे होते थे। पारे के शोधन पर भी उन्होंने बहुत काम किया था। वे सोना बनाने की विधि जानते थे। ये प्रक्रिया अत्यंत कठिन और अनुभव सिद्ध है। अधिकतर कीमियाग़र सोना बनाने में असफल रहे। कुछ थोडे से जो सफल रहे उन्होने इस विद्या को गलत हाथों में पडने के डर से इसे अत्यंत गोपनीय रखा। सिद्ध रसायन नामक प्राचीन ग्रंथ में इसका वर्णन है। और भी कई ग्रंथों में वर्णन है और विभिन्न विधियों का उल्लेख मिलता है।

श्रीसूक्त में 16 मंत्र हैं। श्री सूक्त के प्रथम तीन मन्त्रों में स्वर्ण बनाने की विधि का वर्णन है। भारत के नागार्जुन, गोरक्षनाथ आदि ने इन ऋचाओं के शब्दों को सोना बनाने की विधि में समाहित कर दिया। एक प्रकार से उन्होंने इस विधि को इन ऋचाओं में छुपा दिया था। उन्होंने इन शब्दों का अर्थ संस्कृत के अर्थ से अलग अर्थ किया था। श्रीसूक्त के पहले तीन मंत्रों में सोना बनाने की विधि का वर्णन है। नागार्जुन ने जो उनकी रासायनिक व्याख्या और उनका गुप्त भावार्थ किया है उस पर हम चर्चा करते हैं।

कहा तो यहाँ तक जाता है कि जो श्री सूक्त से लक्ष्मी को सिद्ध कर लेता है उसी को यह विधि सफलता देती है। हमने इस पर प्रैक्टिकल किया है। सोना अवश्य बना था परंतु बहुत अशुद्ध बना था। जितना खर्चा लगा था उतने मूल्य का सोना नहीं बना था। हमने केवल यह देखने के लिए प्रैक्टिकल किया था कि क्या वास्तव में ऐसा सत्य वर्णन आया है? जी हाँ अवश्य आया है, परंतु लगता है कि कुछ प्रकरण ऋषियों ने गुप्त रख लिए हैं, जिनको हम उजागर नहीं कर पा रहे हैं। यह शोध का विषय है। आप यह मत सोच लेना कि फिर हम सोना क्यों नहीं बना लेते। यहाँ इस विषय की जानकारी देने का मात्र उद्देश्य इतना ही है कि भारत में ऋषियों का शोध बहुत गहरा था। हो सकता

है कि आने वाली पीढ़िया इस विषय में शोध कर सफलता प्राप्त करे। आईये श्री सूक्त की ऋचाओं पर चर्चा करते हैं।----

श्रीसूक्त का पहला मंत्र:-

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजां।
चंद्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह॥

जो रासायनिक अर्थ में शब्दार्थ किया है वह इस प्रकार है:-

शब्दार्थ –

1. **हिरण्य्वर्णां**- कूटज,
2. **हरिणीं**- मजीठ,
3. **स्रजाम**- सत्यानाशी के बीज,
4. **चंद्रां**- नीला थोथा,
5. **हिरण्यमयीं -** गंधक,
6. **जातवेदो-** पारा,
7. **मआवह**- ताम्रपात्र.

विधि इस प्रकार है – सोना बनाने के लिए एक बड़ा **ताम्रपात्र** लें, जिसमें लगभग **30 लीटर पानी** आ सके। सर्वप्रथम, उस पात्र में **पारा** रखें। तदुपरांत, पारे के ऊपर बारीक पिसा हुआ **गंधक** इतना डालें कि वह पारा पूर्ण रूप से ढँक जाए। उसके बाद, बारीक पिसा हुआ **नीला थोथा**, पारे और गंधक के ऊपर धीरे धीरे डाल दें। उसके ऊपर **कूटज** और **मजीठ** बराबर मात्रा में बारीक करके पारे, गंधक और नीले थोथे के ऊपर धीरे धीरे डाल दें और इन सब वस्तुओं के ऊपर 200 ग्राम **सत्यानाशी के बीज** डाल दें। यह सोना बनाने का पहला चरण है।

श्रीसूक्त का दूसरा मंत्र:-

तां मआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीं।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहं॥

शब्दार्थ –

तां- उसमें,

पगामिनीं- अग्नि,

गामश्वं- जल,

पुरुषानहं- बीज

विधि इस प्रकार है –बताए गए ताँबे के पात्र में **पारा, गंधक, सत्यानाशी के बीज** आदि एकत्र करने के उपरांत, उस ताम्रपात्र में अत्यंत सावधानीपूर्वक जल इस तरह भरें कि जिन वस्तुओं की ढेरी पहले बनी हुई है, वह बिल्कुल भी न हिले. तदनंतर, उस पात्र के नीचे **आग** जला दें. उस पात्र के पानी में, हर एक घंटे के बाद, 100 ग्राम के लगभग, पिसा हुआ **कूटज**, पानी के ऊपर डालते रहना चाहिए. यह विधि **3 घंटे तक** लगातार चलती रहनी चाहिए.

श्रीसूक्त का तीसरा मंत्र:-

अश्व पूर्वां रथ मध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीं।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीजुषाताम् ॥

शब्दार्थ इस प्रकार है –

अश्वपूर्वां- सुनहरी परत,

रथमध्यां- पानी के ऊपर,

हस्तिनाद- हाथी के गर्दन से निकलने वाली गंध,

प्रबोधिनीं- नीबू का रस,

श्रियं- सोना,

देवी- लक्ष्मी,

उपह्वये- समृद्धि,

जुषाताम- प्रसन्नता.

विधि इस प्रकार है – इस विधि के अनुसार, **अग्नि** जलाने के साथ ही उस पात्र से **तीन घंटे** तक **हाथी के चिंघाड़ने** जैसी ध्वनि सुनाई देने लगेगी. ताम्रपात्र में इन वस्तुओं व पानी के ऊपर एक **सुनहरी सी परत** स्पष्ट दिखाई दे तथा **हाथी के गर्दन से निकलने वाली विशेष गंध**, उस पात्र से आने लगे तो समझना चाहिए कि **पारा सिद्ध** हो चुका है, अर्थात **सोना** बन चुका है।

सावधानी से उस पात्र को **अग्नि से उतारकर** स्वभाविक रूप से **ठंडा** होने के लिए कुछ समय छोड़ दें. पानी ठंडा होने के पश्चात, उस पानी को धीरे धीरे **निकाल** दें. तत्पश्चात्, उस **पारे को निकालकर खरल** में सावधानी से डालकर, ऊपर से **नींबू का रस** डालकर खरल करना चाहिए. बार बार नींबू का रस डालिए और खरल में उस पारे को रगड़ते जाइए, जब तक वह पारा **सोने के रंग** का न हो जाए.

इस विधि को करने में **विशेष सावधानी रखें तथा योग्य रसायनाचार्य** की देख रेख में ही करना चाहिए। इसके धुएँ में हानिकारक गैस होती है जिससे कई असाध्य रोग उत्पन्न हो सकते हैं। अतः इसके धुएं से बचना चाहिए।

आपको केवल यह जानकारी दी गई है। ये उन व्यक्तियों का विषय है जो किमियागिरी से जुड़े हुए हैं और रिसर्च करते हैं। हमे अपने परिश्रम और नित्य के व्यवसाय से ही धन अर्जित करना चाहिए।